कृत्रिम गर्भाधान तकनीक में सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम

पशुपालन में आज भी कृत्रिम गर्भाधान का विस्तार पशुओं की पचास प्रतिशत आबादी से अधिक में नहीं हो पाया है। राजस्थान में ये आंकड़ा और भी कम है। वहीं प्रदेश–देश में द्विर्वीषय पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रमधारी यवाओं का एक बहुत बड़ा वर्ग, विशेषकर गांवों में, बेरोजगार है। कृत्रिम गर्भाधान इन युवाओं के जीविकोपार्जन एवं देश व प्रदेश के अधिक से अधिक पशुपालकों के पशुओं में उत्तम प्रजनन के लिए सही मायनों में अत्यंत ही विश्वसनीय तकनीक है। राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा तैयार इस सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम के पश्चात् द्विर्वीषय पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रमधारी इस तकनीकी सेवा में आत्मनिर्भर हो सकते हैं। प्रशिक्षित युवा इस तकनीकी सेवा से आसानी से 20 हजार रूपये प्रतिमाह या अधिक भी कमा सकते हैं। पाठयक्रम का विवरण निम्न प्रकार हैं।

1. **पाठ्यक्रम का नाम** – कृत्रिम गर्भाधान तकनीक सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम
2. **उद्देश्य** –
    1. माध्यमिक स्कूल शिक्षित युवाओं को रोजगार प्रदान करना
    2. नस्ल सुधार जैसे राष्ट्रीय कार्यक्रम का विस्तार करना
    3. दूर–दराज इलाकों में भी इस तकनीक का विस्तार
    4. देश में पशु उत्पादन में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से वृद्धि करना एवं बेहतर खाद्य सुरक्षा की ओर अग्रसर होना
3. **प्रवेश योग्यता** – द्विवर्षीय पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रय
4. **समय अवधि** – एक माह
5. **न्यूनतम से अधिकतम सीट** – 5 से 15
6. **शुल्क राशि**– 10 हजार रूपये
7. **पाठ्यक्रम का माध्यम** – हिन्दी
8. **परीक्षा विधि** – संबंधित केन्द्रों पर सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक परीक्षा मूल्यांकन पाठ्यक्रम के पश्चात किया जायेगा। दोनों परीक्षाओं में अलग–अलग न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक अर्जित करना अनिवार्य होगा। दोनों ही परीक्षा 50–50 अंकों की, कुल परीक्षा 100 अंकों की होगी। सैद्धान्तिक परीक्षा समय अवधि 1 घंटा एवं प्रायोगिक परीक्षा समय अवधि 1 घंटा एवं 30 मिनट की होगी। किसी भी परीक्षा में अनुर्तीण होने पर पूर्ण प्रशिक्षण एवं दोनों ही परीक्षा में पुनः प्रवेश लेना होगा। ऐसे परीक्षार्थियों का पुनः प्रशिक्षण शुल्क 5 हजार रूपये होगा। दूसरी बार अनुर्तीण होने पर परीक्षार्थी को पाठ्यक्रम से बाहर कर दिया जाएगा।

9. **प्रवेश प्रक्रिया**– विश्वविद्यालय द्वारा समाचार पत्रों, विश्वविद्यालय के प्रकाशनों, धीणे री बात्यां रेडियो कार्यक्रम व विश्वविद्यालय वेबसाइट के माध्यम से इन पाठयक्रमों की सूचना दी जाएगी तथा प्रत्येक पाठ्यक्रम में न्यूनतम पाँच आवेदन प्राप्त होने पर उनका पाठयक्रम अनुदेशक से मूल्यांकन करवा कर पाठयक्रम प्रारम्भ किया जायेगा।

10. **अनुशासन नियमावली** – विश्वविद्यालय नियमानुसार

11. **सम्पर्क सूत्र** – प्रो. जे.एस. मेहता, विभागाध्यक्ष, पशु प्रसूति एवं मादा रोग विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, मोबाइल नम्बर – 9414278372
    डॉ. प्रमोद कुमार, सहायक आचार्य, पशु प्रसूति एवं मादा रोग विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, मोबाइल नम्बर – 9414541407, 9828890576

12. **पाठ्यक्रम** –निम्नानुसार

सैद्धान्तिक–

मादा पशु जनन अंगों की संरचना, मादा पशु प्रजनन क्रिया; पशुओं में मद चक्र की प्रक्रिया; मद काल के लक्षण; गुदा द्वार से जंनन अंगों की परीक्षण विधि, जनन अंगों से मद काल में म्यूकस निकालने एवं परीक्षण करने की विधि; कृत्रित गर्भाधान का सही समय ज्ञात करना; क्रायोकेन, तरल नत्रजन, उपकरण एवं अन्य सामान की जानकारी एवं उपयोग विधि; सीमन डोजेज के प्रकार एवं उन पर अंकित जानकारी एवं उनका महत्व; सीमन डोजेज की उपयोग की विधि; सही सीमन डोज जानने के लिए किये जाने वाले परीक्षण; सीमन डोजेज, क्रयोकेन, तरल नत्रजन, अन्य उपकरण एवं सामान का रखरखाव; कृत्रिम गर्भाधान विधि; गर्भधारण परीक्षण विधि; प्रजनन, कृत्रिम गर्भाधान एवं गर्भ परोक्षण जानकारी का रिकार्ड संधारण एवं महत्व।

प्रायोगिक –

बूचड़खाने से प्राप्त मादा जनन अंगों का परीक्षण एवं अध्ययन; गायों व भैसों में गुदा मार्ग से जनन अंगों का परीक्षण करना, क्रायोकेन, तरल नत्रजन, सीमन डोजेज अन्य उपकरण एवं सामान का सही प्रयोग एवं रखरखाव; गायों एवं भैंसों के मद काल के लक्षणों का अध्ययन करना एवं कृत्रिम गर्भाधान का सही समय ज्ञात करना; कृत्रिम गर्भाधान गन तैयार करना एवं गायों एवं भैंसों में कृत्रिम गर्भाधान करना; गर्भधारण परीक्षण करना, प्रजनन संबंधी रिकार्ड का संधारण करना।